स्कूल संस्कृति | विभिन्न परिस्थितियों और समय अवधियों में भिन्नताएँ

राहुल मुखोपाध्याय

स्कूल संस्कृति का मतलब मूल रूप से इसके हितधारकों यानी स्कूल के प्रशासन, प्रबन्धन, शिक्षकों, बच्चों, माता-पिता और समुदाय में शिक्षा का एक उद्देश्य स्थापित करना है। यह उद्देश्य औपचारिक योग्यताओं और प्रमाणपत्रों पर ज़ोर देने, कौशल निर्माण, रोज़गार क्षमता, और यहाँ तक कि ज्ञान सृजन की निरन्तरता बनाए रखने जैसे शिक्षा के संकीर्ण उपयोगितावादी उद्देश्यों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। इसका यह मतलब नहीं है कि ये उद्देश्य स्कूली शिक्षा के उद्देश्य नहीं हो सकते या नहीं होने चाहिए। लेकिन, अगर ये उद्देश्य स्कूल के अस्तित्व में होने के सबसे महत्त्वपूर्ण कारण बन जाते हैं, तब हमारा चिन्ता करना जायज़ है। अगर स्कूल हमें विविधता के प्रति सम्मान, न्याय की भावना, ज़िम्मेदारी और ईमानदारी जैसे बुनियादी मानवीय मूल्य, क़ानूनी, नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय निहितार्थों के सन्दर्भ में सही और ग़लत के बीच अन्तर करने के तरीक़े, और सशक्त बनाने वाले, परवाह करने वाले एवं विवेचनात्मक रूप से चिन्तनशील तरीक़ों से दूसरों के साथ अपने रिश्ते के सन्दर्भ में ख़ुद को समझना नहीं सिखाते हैं, तो हम शायद शिक्षा के मूल लक्ष्य को हासिल करने से चूक जाते हैं।

यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि संस्कृति विशेषताओं का एक अपरिवर्तनीय समूह नहीं है, चाहे हम उन्हें स्कूल के रिवाज कहें, रोज़मर्रा की प्रथाएँ कहें या विश्वास प्रणालियाँ। संस्कृति लगातार बदलती है और स्कूल के विभिन्न घटकों से ही यह निर्मित और पुनर्निर्मित होती है, जिसका अर्थ यह है कि किसी निश्चित समय अवधि में स्कूलों की एक ख़ास संस्कृति हो सकती है, जिसमें कुछ विशिष्ट घटक (जैसे कि इसके प्रबन्धन में शामिल लोग, प्रधान शिक्षक, शिक्षक या इसमें पढ़ने वाले विद्यार्थियों की पृष्ठभूमि) शामिल होते हैं। किसी और समय अवधि में लोगों के अलग समूह के साथ स्कूल की एकदम अलग संस्कृति हो सकती है। भारत के सन्दर्भ में हम एक और ग़लती करते हैं। हम एकदम अलग तरह के संस्थानों से सम्बद्ध स्कूलों की संस्कृतियों को एक जैसी मानते हैं। आइए इसे स्पष्ट करने के लिए दो काल्पनिक उदाहरण लेते हैं। काल्पनिक होने के बावजूद भी, ये उदाहरण भारत में स्कूली शिक्षा प्रणाली की समकालीन सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक वास्तविकताओं का उपयोग ही करते हैं।

स्कूल अ

इस सरकारी प्राथमिक स्कूल की स्थापना 1970 के दशक की शुरुआत में हुई थी। यह एक समृद्ध ग्रामीण क्षेत्र में स्थित था, जो कि जिला मुख्यालय से ज़्यादा दूर नहीं था, लेकिन उसके बाद भी यहाँ के लिए नियमित सार्वजनिक परिवहन सुविधाओं का अभाव था। इस क्षेत्र के परिवारों का मुख्य व्यवसाय कृषि और सम्बन्धित गतिविधियाँ थीं। स्कूल पंचायत के छह गाँवों को शैक्षिक सेवाएँ प्रदान करता था। पहले दो दशकों में, इसने अधिकतर पंचायत की प्रभुत्व वाली जाति को सेवा प्रदान की थी, जिन्हें हरित क्रान्ति से फ़ायदा हुआ था और वे अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए उत्सुक थे। क्षेत्र में रहने वाले अनुसूचित जाति और जनजातियों के परिवार अपने बच्चों को स्कूल भेजने की स्थिति में नहीं थे। इसकी वजह यह थी कि स्कूल भेजने की अवसर लागत[i] (opportunity costs) उनके लिए बहुत अधिक थी, यहाँ तक कि बच्चों को सरकारी स्कूल में भेजना भी उनके लिए इतना मँहगा था कि उसे वहन कर पाना उनकी वित्तीय क्षमता से परे था।

स्कूलों में शिक्षकों की संख्या पर्याप्त थी और एक ऊर्जावान और सक्रिय प्रधान शिक्षक की बदौलत वे प्रभुत्वशाली जाति के बच्चों के साथ सार्थक ढंग से जुड़ पा रहे थे। इन बच्चों को घर पर शिक्षा का कुछ अनुभव हासिल था। उनके माता-पिता ने बुनियादी स्तर की स्कूली शिक्षा पूरी की थी और स्कूल के घण्टों के अलावा अतिरिक्त समय, अवसर और सुविधाएँ प्रदान करके अपने बच्चों की शिक्षा में सहायता प्रदान करने में उनकी दिलचस्पी थी। समाज के निचले दर्जे से आने वाले कुछ बच्चों की स्कूल में उपेक्षा की जाती थी, और शिक्षक अपने तौर-तरीक़ों में आस-पास के गाँवों में मौजूद सामाजिक विभाजनों और असमानताओं को कायम रखते थे। अकादमिक प्रदर्शन के सन्दर्भ में, प्रभुत्वशाली जातियों के बहुत-से बच्चों ने प्राथमिक स्तर से आगे सफलतापूर्वक अपनी शिक्षा जारी रखी, जबकि वंचित समूहों के अधिकांश बच्चों ने

प्राथमिक स्तर के शुरुआती सालों में ही या प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी करते ही स्कूल छोड़ दिया।

गुज़रे दशकों में, स्कूल के प्रधान शिक्षक और शिक्षकों के पदों पर बदलाव हुए, प्रशासनिक तबादले हुए और पदोन्नतियाँ हुईं। इसके अलावा माता-पिता की अँग्रेज़ी माध्यम की स्कूली शिक्षा की बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए कुछ छोटे निजी स्कूल भी उभरे। निजी स्कूलों के उभरने को माता-पिता में व्याप्त इस धारणा ने भी बल दिया कि सरकारी स्कूल उस गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के मामले में न्याय नहीं कर सके, जैसी वे अपने बच्चों के लिए चाहते थे। प्रभुत्वशाली जातियों के कई बच्चे इन निजी स्कूलों में चले गए, जबकि एससी, एसटी और अन्य पिछड़े वर्गों (OBCs) के बच्चे और इन समुदायों की ज़्यादा लड़कियाँ सरकारी स्कूलों में गईं; क्योंकि केन्द्र और राज्य स्तरीय सरकारी योजनाओं ने सरकारी स्कूलों में जाने की लागतों और शिक्षा की प्रत्यक्ष वित्तीय लागतों को पहले से बहुत कम कर दिया। शिक्षकों को स्कूल जाने वाले पहली पीढ़ी के बच्चों और ऐसे बच्चों को शिक्षित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिन्हें शिक्षा के लिए घर से बहुत कम सहायता प्राप्त थी। हालाँकि एक काबिल प्रधान शिक्षक या अपने काम के प्रति समर्पित चन्द शिक्षकों के होने से काफ़ी फ़र्क़ पड़ा। इन शिक्षकों ने स्कूल और उसके पिछले अकादमिक प्रदर्शन को उन्हें सौंपी गई विरासत माना और इसे संरक्षित करना अपनी ज़िम्मेदारी माना। नतीजन उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि शिक्षा के नए कार्यक्रमों को स्कूल में ज़िम्मेदारी के साथ लागू किया जाए। हालाँकि, शिक्षकों के बीच जाति विभाजन से जुड़ी मान्यताएँ कायम रहीं और ये अकसर स्कूल के माहौल के विभिन्न पहलुओं में नज़र आती थीं। लेकिन शिक्षकों ने स्कूली शिक्षा के फ़ायदों, स्कूल में नियमित उपस्थिति और घर पर बच्चों की शिक्षा में सहायता के बुनियादी तरीक़ों जैसी बातों के फ़ायदों के बारे में समुदाय को जागरूक करने के लिए लोगों से संवाद करने के महत्त्व को भी समझा। नतीजन, स्कूल में नामांकित मुख्यतः वंचित समूहों के लगभग सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के आगे के चरणों तक पहुँच सके।

स्कूल की प्रथाओं की बात करें तो, स्कूल की असेम्बली स्कूल में पिछले कई सालों से हो रही थी। इसमें बच्चे उनकी कक्षा और जेंडर के अनुसार पंक्ति में खड़े होते थे। लेकिन, असेम्बली में होने वाली विभिन्न गतिविधियों में लड़कों और लड़कियों दोनों को समान अवसर दिए जाते थे, जैसे राज्य गान और राष्ट्र गान गाना, कक्षा की गतिविधियों के दौरान विद्यार्थियों द्वारा पूरे किए गए कार्यों को साझा करना और उनका प्रस्तुतीकरण, किसी शिक्षक के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों द्वारा राज्य स्तरीय और राष्ट्र स्तरीय महत्त्वपूर्ण मुद्दों को साझा करना। अन्य प्रथाएँ जो कायम रहीं, उनमें से एक शिक्षकों में पेशेवर सौहार्द की भावना थी। इसके तहत शिक्षकों ने हर सप्ताह आधे दिन का समय कक्षा में उनकी चुनौतियों, इन चुनौतियों का सामना करने के लिए उनके द्वारा अपनाए गए तरीक़ों को साझा करने और एक-दूसरे से सुझाव माँगने के लिए निर्धारित किया। प्रधान शिक्षक की शिरक़त होने-न-होने से प्रभावित हुए बिना यह प्रक्रिया जारी रही, हालाँकि इस प्रक्रिया को शुरू करने में पहले प्रधान शिक्षक की बहुत अहम भूमिका थी।

स्कूल ब

इस ग़ैर सहायता प्राप्त निजी स्कूल की स्थापना लगभग उसी समय हुई थी, जब *स्कूल अ* की हुई थी, यानी 1960 के दशक के आख़िर में। स्कूल की स्थापना एक जानी-मानी कॉर्पोरेट इकाई के तहत एक न्यास के तौर पर हुई थी। इस कॉर्पोरेट इकाई के कई व्यावसायिक हित थे, लेकिन यह विभिन्न स्थानों पर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में परोपकारी निवेशों के लिए भी जानी जाती थी। स्कूल की स्थापना एक टियर-1 शहर के केन्द्र में की गई थी। यहाँ मध्यम और उच्च वर्ग के लोगों की आबादी अच्छी-ख़ासी थी और स्कूल में शुरुआती दाखिले इन वर्गों के बच्चों के ही हुए। समय के साथ इस समूह के लोगों ने स्कूल के बारे में अपनी राय आपस में साझा की, जिससे स्कूल की प्रतिष्ठा और उसमें होने वाले नामांकन और बढ़े।

इस्तेमाल के लिए पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता होने की वजह से, शुरुआत से ही स्कूल अत्याधुनिक बुनियादी ढाँचा और सुविधाएँ विकसित कर सका और शहरी मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि के सुयोग्य शिक्षकों की नियुक्ति कर सका। पिछले कुछ वर्षों में, इन मानकों को बरक़रार रखा गया है और ज़रूरत के अनुसार इनमें बदलाव किया गया है। जिन परिवारों और बच्चों ने स्कूल की सेवाएँ इस्तेमाल की और जो शिक्षक यहाँ पढ़ाने आए, उन्होंने स्कूल को ख़ुद ही चुना और इसी की बदौलत स्कूल चलता रहा। कम विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात, पाठ्यचर्या का एक समग्र दृष्टिकोण (जिसमें पाठ्यक्रम-सहगामी गतिविधियाँ शामिल थीं), शिक्षण की नई विधियों को आज़माने के लिए शिक्षकों को मिली स्वायत्तता ने विद्यार्थियों के विकास में योगदान दिया। इसके साथ ही, बच्चों को मुख्यधारा के स्कूलों के नियमित अनुशासनात्मक स्वरूपों और विषय-क्षेत्रों के बीच के स्पष्ट विभाजनों से परे जाकर प्रगति करने की आज़ादी दिए जाने से स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद विद्यार्थी ज़्यादा आत्मविश्वासी और सक्षम बन पाए।

सीखने-सिखाने के अपने समग्र माहौल के अनुरूप, स्कूल में अन्य प्रथाएँ भी अनूठे तरीक़ों से विकसित हुईं। स्कूल में शास्त्रीय संगीत का प्रशिक्षण लेने वाले विद्यार्थी असेम्बली में स्वेच्छा से गाने गाते थे। असेम्बली के दौरान शिक्षक

और बच्चे गोल घेरे में बैठते थे, जिसमें कक्षा और लिंग के आधार पर कोई विभाजन नहीं था। गीतों के बाद शिक्षक और विद्यार्थी आवंटित समय का इस्तेमाल उनके द्वारा सुझाव पेटी में जमा किए गए विभिन्न मुद्दों पर चर्चाएँ करने के लिए करते थे। विद्यार्थियों की आवाज़ों को जगह दी जाती थी और इस प्रकार की चर्चाओं के लिए शिक्षकों और वरिष्ठ विद्यार्थियों द्वारा मिलकर तैयार किए गए मानकों का पालन करते हुए विवादास्पद विषयों पर बहस होती थी। इनमें से कुछ विवादास्पद मुद्दों को विद्यार्थियों के नेतृत्व वाले क्लबों द्वारा परियोजनाओं के रूप में अपने हाथ में ले लिया जाता था और वे शिक्षकों के मार्गदर्शन में इन पर काम करते थे।

हालाँकि, यह स्थिति 1990 के दशक की शुरुआत तक ही बनी रही। बदलते हुए आर्थिक परिदृश्य और उसी शहर में उतनी ही या उससे ज़्यादा प्रतिष्ठा वाले निजी स्कूलों के सामने आने की वजह से स्कूल को एक प्रतिस्पर्धात्मक दुनिया के लिए अपने विद्यार्थियों की तैयारी के सवालों से दो-चार होना पड़ा। स्कूल के ट्रस्टियों ने स्कूल की कार्यनीतियों को लेकर पुनर्विचार शुरू किया, जिसके फलवरूप प्रबन्धन में शामिल लोग बदले गए और स्कूल की प्रक्रियाओं और प्रथाओं को पूरी तरह बदल दिया गया। सार्वजनिक परीक्षाओं के परिणामों, शहर भर में होने वाले पाठ्यक्रम सम्बन्धी और पाठ्यक्रम-सहगामी कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के प्रदर्शन, और उच्च शिक्षा तथा पेशेवर जीवन में प्रवेश के बाद विद्यार्थियों के रास्ते स्कूल के लिए प्रमुख प्रेरक कारक बन गए।

स्कूल में पहले प्रति शिक्षक विद्यार्थियों की संख्या कम थी, इसकी जगह पर हर एक कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाई गई। यह बदलाव कथित वैश्विक मानकों को पूरा करने के लिए बुनियादी ढाँचे और सुविधाओं को उन्नत करने की वित्तीय व्यवहार्यता को उचित ठहराने के लिए किया गया था। इसी तरह, शिक्षक की स्वायत्तता की जगह पर प्रबन्धकीय जवाबदेही की व्यवस्था लागू की गई, जिसमें सख़्त पदानुक्रम पर आधारित स्कूल प्रशासन तंत्र शिक्षक के प्रदर्शन का बारीकी से निगरानी कर रहा था। इस नई व्यवस्था ने शिक्षकों की नौकरी की सुरक्षा और स्कूल में उनकी प्रगति को उनके प्रदर्शन से जोड़ा।

स्कूल की संस्कृति : विभिन्न संस्थागत सन्दर्भ

इन दो उदाहरणों के बारे में ध्यान देने योग्य पहली बात यह है कि चार दशकों में दोनों स्कूलों की संस्कृति में बदलाव आया था। *स्कूल अ ने* ज़्यादा समावेशी संस्कृति बनाने की दिशा में काम किया, हालाँकि स्कूल के शिक्षकों की मान्यताओं पर अभी भी उस निकटतम सामाजिक और सांस्कृतिक माहौल का गहरा प्रभाव है, जिसमें स्कूल स्थित है। इसी प्रकार, *स्कूल ब* को एक बदले हुए आर्थिक परिदृश्य की वजह से पड़ने वाले बाहरी दबावों के अनुरूप ख़ुद में बदलाव लाना पड़ा क्योंकि इस बदले हुए आर्थिक परिदृश्य के अनुरूप उच्च और मध्यम वर्ग की शिक्षा प्रणाली से अपेक्षाएँ और माँगें बदल गई थीं। *स्कूल अ* की तुलना में *स्कूल ब* ने मानक स्कूली संस्कृति (शिक्षा के मूल्यों और उद्देश्यों पर आधारित) से उपयोगितावादी स्कूली संस्कृति (केवल आर्थिक तैयारी पर केन्द्रित शिक्षा के उद्देश्यों पर ज़्यादा आधारित) में रूपान्तरण किया। इस प्रकार, स्कूल की संस्कृतियाँ समय के साथ बदलती हैं।

दूसरा बिन्दु यह है कि हम अकसर बिलकुल जुदा संस्थागत सन्दर्भों में स्थित स्कूलों की संस्कृतियों की तुलना करने की ग़लती करते हैं। यह विशेष रूप से तब सच हो जाता है, जब सरकारी स्कूलों की तुलना निजी स्कूलों से की जाती है, ख़ासकर उन निजी स्कूलों से, जिनमें उच्च और मध्यम वर्ग के लोग अपने बच्चों को भेजते हैं। सरकारी स्कूल अभी भी सूक्ष्म सन्दर्भों (सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक) से बहुत गहराई से जुड़े होते हैं। वे इन सन्दर्भों से प्रभावित होते हैं और उन्हें प्रभावित भी करते हैं। स्कूल अकसर इन सूक्ष्म सन्दर्भों को ही पुनरुत्पादित करते हैं या फिर उन्हें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इनके बारे में जागरूक होने की ज़रूरत होती है। सरकारी स्कूलों की यह विशेषता उनकी प्रकृति से जुड़ी होती है। सरकारी स्कूल इस विचार पर आधारित होते हैं कि शिक्षा हर किसी के लिए उपलब्ध होनी चाहिए और उन्होंने ऐतिहासिक रूप से शिक्षा से वंचित हाशिए के समुदायों के लिए शिक्षा को उत्तरोत्तर अधिक सुलभ बनाने की दिशा में काम किया है। सरकारी स्कूलों की संस्कृतियों को भी न केवल उस संस्थागत प्रणाली के सन्दर्भ से अलग करके नहीं देखा जा सकता, जिसका वे हिस्सा होते हैं यानी स्कूल के प्रशासन का व्यापक ढाँचा, बल्कि उस राज्य विशेष में शासन की संस्कृति से भी अलग करके नहीं देखा जा सकता।

दूसरी ओर, निजी स्कूलों पर इस तरह का दायित्व कभी नहीं रहा। हालाँकि ऐसे निजी स्कूल भी रहे हैं जिन्होंने इन्ही सिद्धान्तों का पालन किया है, लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है। कुछ हद तक, विभिन्न प्रकार के निजी स्कूलों में 'सुरक्षापूर्ण समुदाय' की विशेषताएँ होती हैं। इसके तहत वे ख़ुद को अपने आस-पास के सूक्ष्म सन्दर्भों से अलग रख सकते हैं और ऐसी प्रक्रियाएँ विकसित कर सकते हैं, जो बच्चों को स्कूल की एक विशिष्ट संस्कृति से परिचित कराएँ।[ii] इस शृंखला के एक छोर पर, हमें ऐसे अभिजात बोर्डिंग स्कूल और बहुत से वैकल्पिक स्कूल नज़र आ सकते हैं, जो उच्च मध्यम वर्गों और मध्यम वर्गों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। वहीं शृंखला के दूसरे छोर पर, हमें ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में छोटे निजी स्कूल नज़र आते हैं, जो शिक्षा का थोड़ा बहुत ख़र्च उठा सकने में

सक्षम आबादी के अपेक्षाकृत ग़रीब तबक़ों की शिक्षा की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। इस पूरी शृंखला में ही, निजी स्कूलों में सामान्यतः ज़्यादा कसी हुई प्रशासनिक व्यवस्थाएँ होती हैं जो कॉर्पोरेट संस्थाओं की तरह ऐसी प्रक्रियाएँ लागू करते हैं जिनके आधार पर स्कूल की दैनिक कार्यप्रणालियाँ निर्धारित की जाती हैं। इन स्कूलों का वृहद-सांस्थानिक दायरा उनके अपने प्रबन्धन निकायों तक ही सीमित होता है, उसी तरह जिस तरह उनके उद्देश्य वंचित समूहों की ज़रूरतों को पूरा नहीं करते। इसके बजाय, आमतौर पर वे अपेक्षाकृत एक जैसी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और पृष्ठभूमियों वाले विस्तृत मध्यम व उच्च वर्गों को सेवाएँ प्रदान करने पर ध्यान केन्द्रित करते हैं।

स्कूल की संस्कृति के सन्दर्भ में क्या बातें मायने रखती हैं

पिछले खण्ड में, *स्कूल अ* और *स्कूल ब* दोनों के उदाहरणों में ऐसे कारक मौजूद हैं जिन्हें शिक्षाविदों ने जीवन्त, सकारात्मक स्कूल संस्कृतियों के लिए महत्त्वपूर्ण माना है। हालाँकि, स्कूल संस्कृति के सन्दर्भ में क्या मायने रखता है, इस सवाल के सरल व स्पष्ट जवाब देना आसान नहीं है। जैसे कि, सकारात्मक स्कूल संस्कृति के संकेत के तौर पर इस बात पर खूब ज़ोर दिया जाता है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-अधिगम सामग्रियों, शिक्षाशास्त्र और आकलनों से जुड़े हुए फ़ैसलों के सन्दर्भ में स्कूल स्तर पर स्वायत्तता हो। लेकिन किसी निजी स्कूल के लिए शुरुआती वर्षों में इसे स्थापित करना मुश्किल हो सकता है, क्योंकि शिक्षकों को उन बुनियादी विचारों, सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं को समझने के लिए ज़्यादा मार्गदर्शन और मदद की जरूरत होती है, जिनकी परिकल्पना स्कूल को दिशा देने के लिए की गई होती है। सरकारी स्कूल के लिए भी यह मुश्किल ही है क्योंकि वहाँ आगे बढ़ाए जाने वाले एक मूल्य के तौर पर इस तरह की स्वायत्तता का समर्थन करने वाले मददगार प्रधान शिक्षक और मददगार प्रशासनिक प्रणाली की कमी होती है।

इस अस्पष्टता को देखते हुए, एक ज़्यादा व्यावहारिक तरीक़ा होगा स्कूल के उद्देश्य पर फिर से विचार किया जाए, जहाँ से हमने शुरुआत की थी। अगर कोई स्कूल शिक्षा को सार्वजनिक भलाई की वस्तु मानता है और उसका यह विचार स्कूल के रीति-रिवाज़ों, विश्वासों और रोज़मर्रा की प्रथाओं के रूप में प्रगट होता है, तो इस बात की ज़्यादा सम्भावना होती है कि वह स्कूल एक सकारात्मक संस्कृति विकसित करने के लिए काम कर रहा है। इस संस्कृति में शिक्षाविदों द्वारा स्कूली संस्कृति के अपने अध्ययनों में महत्त्वपूर्ण माने जाने वाले कारक शामिल होंगे, जैसे विविधता, सत्यनिष्ठा, दृढ़ता, लचीलापन, स्वायत्तता, ज़िम्मेदारी और आत्म-सम्मान जैसे बुनियादी मानवीय मूल्यों के प्रति सम्मान और उनसे जुड़ी विवेचनात्मक रूप से चिन्तनशील प्रक्रियाएँ, जो स्कूल के माहौल और विभिन्न हितधारकों के साथ इसके सम्बन्धों में व्याप्त होते हैं।

टिप्पणियाँ :

[i]एक विकल्प के चुने जाने पर अन्य विकल्पों का ख़त्म हो जाना।

[ii]सरकारी स्कूल की तुलना में, स्थानिक रूप से बिखरे हुए जनसंख्या समूह से परिवारों को आकर्षित करने की निजी स्कूलों की क्षमता, निजी स्कूलों के लिए उनके सूक्ष्म सन्दर्भों से एक प्राकृतिक वियोजन प्रक्रिया के रूप में भी कार्य करती है।

राहुल मुखोपाध्याय अज़ीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, भोपाल में संकाय सदस्य हैं। उनसे rahul.mukhopadhyay@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : शहनाज़ **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** प्रतिका गुप्ता